nbt.india
एकः सूते सकलम्

साक्षर भारत

मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50
वार्षिक ₹ 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

साक्षरताकर्मियों के लिए

फरवरी 2014 वर्ष 19, अंक 2

जन्मदिन स्मरण, 11 फरवरी पर विशेष

आचार्य रामलोचन शरण : अनासक्त कर्मयोगी

वर्ष 1989 में देश जब प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की जन्म शताब्दी मना रहा था उसी वर्ष देश के प्रखर विद्वान, लेखक, संपादक, प्रकाशक आचार्यप्रवर रामलोचन शरण की भी जन्म शताब्दी मनाई जा रही थी। 11 फरवरी, 1889 को बिहार के सीतामढ़ी जिले के राधाउर गाँव में पैदा हुए रामलोचन शरण एक साथ इतनी विधाओं के शिखर पुरुष थे कि सहसा विश्वास नहीं होता। वे बहुआयामी व्यक्तित्व के स्वामी थे, सर्वगुणसंपन्न थे। वे अध्यापक थे, हिंदीसेवी और भाषाविद् थे, समाजसेवी, राष्ट्रवादी एवं मानवतावादी थे, साक्षरता प्रहरी भी थे। वे हिंदी के साथ मैथिली, संस्कृत एवं उर्दू के भी विद्वान थे। लेखन क्षेत्र में यों तो उन्होंने अनेक विधाओं को साधा, किंतु बाल साहित्य उनकी प्रिय विधा थी, तभी तो शिवपूजन सहाय ने उन्हें 'बिहार का गिजूभाई बधेका' कहा।

प्रकाशक, संपादक, लेखक, व्याकरणाचार्य, भाषाविद्, साक्षरताप्रेमी आदि अनेक रूपों के स्वामी आचार्य शरण के विभिन्न अवदानों को यहाँ हम केवल सूत्र रूप में याद भर कर सकते हैं। सन् 1915 में दरभंगा जिला के अंतर्गत लहेरियासराय में 'पुस्तक भंडार' की स्थापना बिहार प्रांत में प्रकाशन, साहित्य और

पृ. सं. 2, कॉलम 1 पर जारी...

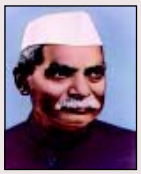

विज्ञान जब तक जन-कल्याण की भावना से विकसित होता रहा, तब तक उससे मानव-समाज का हित ही होता रहा है। ...मनुष्य यंत्रों के लिए नहीं है, यंत्र उसके लिए हैं। यही नहीं, विज्ञान की शक्तियाँ भी मानव-कल्याण के लिए ही हैं, मानव उन शक्तियों के लिए नहीं। **–डॉ. राजेंद्र प्रसाद,** भारत के प्रथम राष्ट्रपति

पुण्यतिथि, 28 फरवरी (1963) पर स्मरणस्वरूप

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस, 21 फरवरी पर विशेष

हमारी भाषा हमारा प्रतिबिंब

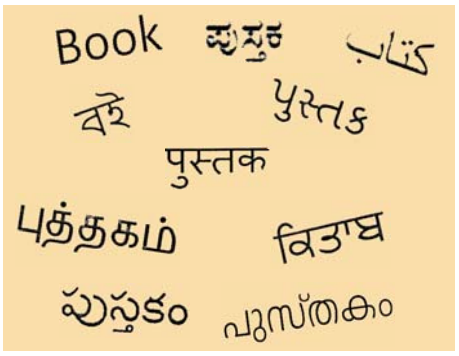

हिंदी एवं अँग्रेजी समेत विभिन्न भारतीय भाषाओं में 'पुस्तक'

ऋग्वेद में कहा गया है–*अहं राष्ट्री संगमनी वसू नाम।* यानी, मैं (भाषा) राष्ट्र निर्मात्री और जनों को संबद्ध करने वाली हूँ। पतंजलि का भाषा के संबंध में कहना था– *भाषा का निर्माण व्याकरण या वैयाकरण नहीं करता, लोक करता है। इसलिए कोई व्यक्ति वैयाकरण के पास जाकर यह नहीं कहता कि तुम शब्द बनाओ, जिसे मैं प्रयोग में लाऊँगा।* भाषा/मातृभाषा के संबंध में वेदकाल से लेकर आधुनिक समय तक के विद्वानों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए हैं जिससे भाषा के महत्व का पता चलता है। प्रकांड विद्वान राहुल सांकृत्यायन तो मातृभाषा को 'जन्मसिद्ध अधिकार' तक बतलाते हैं। वे कहते हैं–*अपनी मातृभाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने का अधिकार हमारा वैसा ही जन्मसिद्ध अधिकार है, जैसा राजनीतिक स्वतंत्रता का।* एक विदेशी विद्वान टॉमस डेविस मातृभाषा की महत्ता का गुणगान करते हुए यहाँ तक कहते हैं कि *"मातृभाषा-हीन जाति 'जाति' नहीं कही जा सकती।*

पृ. सं. 2, कॉलम 2 पर जारी...

मुझे आश्चर्य हुआ कि कुछ लोग विज्ञान को इस तरह से क्यों देखते हैं जो व्यक्तियों को ईश्वर से दूर ले जाए। जैसा कि मैंने इसमें देखा कि हृदय के माध्यम से ही हमेशा विज्ञान तक पहुँचा जा सकता है। मेरे लिए तो यह हमेशा आध्यात्मिक रूप से समृद्ध होने और आत्म ज्ञान का रास्ता रहा। **–डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम,** पूर्व राष्ट्रपति

संदर्भ : राष्ट्रीय विज्ञान दिवस, 28 फरवरी

मातृभाषा विचारों की वाहिनी और संस्कारों की जननी है।

पत्रकारिता की दुनिया में उनका महत्तम अवदान माना जाता है। यहीं से 1926 से उन्होंने *बालक* नामक युग प्रवर्तक बाल पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया, जिसके बारे में प्रेमचंद ने 'बालकों के लिए निकल रही पत्रिकाओं में सर्वश्रेष्ठ' कहा था। 1928 में उन्होंने विद्यापति प्रेस की स्थापना की और 1941 में हिमालय प्रेस की। उनके द्वारा रचित *मनोहर पोथी* नाम से बच्चों को हिंदी वर्णमाला सिखाने वाली पहली पुस्तक अब तक हिंदी वर्णमाला की अग्रणी पुस्तक मानी जाती है।

इन सबसे पूर्व, 1915 के आसपास *व्याकरण बोध, व्याकरण चंद्रिका* और *व्याकरण चंद्रोदय* आदि सदृश उन्होंने व्याकरण की बीसियों पुस्तक का प्रणयन किया था। इस कारण वे 'व्याकरणाचार्य' के रूप में ख्यात हुए। श्री शरण ने बिहार विद्यापीठ के लिए *राष्ट्रीय साहित्य* नाम से छह भागों में जो पाठ्य-पुस्तक निकाला वह मील का पत्थर बन गया। उन्होंने विद्यापीठ के लिए और भी पुस्तकें लिखीं। अनेक *रीडर* भी रचे। हिंदी में बाल पुस्तकों के क्षेत्र में उनका लेखन अथक और अनंत था। उच्च साहित्य-ग्रंथों के प्रणयन के लिए भी वे चर्चित हैं। शताधिक ग्रंथों का संपादन भी उन्होंने किया। इनमें गाँधी साहित्य का संपादन महत्वपूर्ण है।

निरक्षरता-निवारण के क्षेत्र में उनका अपूर्व योगदान रहा। इस हेतु सौ पुस्तकों के संपादन एवं साक्षरता-प्रचार के उनके अन्य प्रयासों के मद्देनजर 'यूनेस्को' से सम्मानपूर्ण सम्मति प्राप्त हुई। निरक्षरता-निवारण की दिशा में उनके द्वारा की गई पहल के फलस्वरूप यूनेस्को के मोनोग्राफ में लिखा गया–एशिया का सर्वप्रथम सफल योजनामय प्रयास।

गोस्वामी तुलसीदास रचित श्री रामचरित मानस–सिद्धांत तिलक एवं श्री रामचरित मानस–सिद्धांत भाष्य के संपादन के अलावा उनकी *विनय पत्रिका* आदि कृतियों पर भी टीकाएँ उन्होंने लिखीं। उन्होंने भारत की अनेक जनजातीय भाषाओं के गीतों का संग्रह कराके नागरी लिपि में प्रकाशित भी कराया। बाल पुस्तकों का प्रकाशन कर देश के विभिन्न प्रांतों के अलावा विदेशों तक में उन्होंने इनका निःशुल्क वितरण किया।

आचार्य शरण ने अनेक विद्यालय-महाविद्यालय स्थापित किए या उसमें सहायक रहे। दान-पुण्य के रूप में समाजसेवा भी की। राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन की अग्रणी पार्टी, काँग्रेस के साथ गहरे रूप से जुड़े रहे, इस नाते स्वाधीनता के सेनानी भी बने। अनेक पुरस्कार और सम्मानों से सम्मानित रामलोचन शरण के करिअर की शुरुआत अध्यापन कार्य से हुई थी। 1942 में उनकी विद्वता से प्रभावित हो दरभंगा-नरेश ने उन्हें 'आचार्य' की उपाधि प्रदान की थी। आचार्य शरण स्वयं को 'अनासक्त कर्मयोगी' मानते थे। इस महान विभूति का 14 मई, 1971 को दरभंगा में देहावसान हुआ।

मातृभाषा की रक्षा देश की सीमा की रक्षा से भी अधिक आवश्यक है, क्योंकि यह पर्वत और नदी से भी अधिक बलवती है।'' महात्मा गाँधी मातृभाषा की उपेक्षा को 'राष्ट्रीय आत्महत्या' की संज्ञा देते हैं। उनका कथन है–*हम मातृभाषा की उपेक्षा नहीं कर सकते। वह तो राष्ट्रीय आत्महत्या होगी... हमें उसे समृद्ध करना ही होगा और इस योग्य बनाना होगा कि वह सभी प्रकार के विचारों तथा भावों को अभिव्यक्त कर सके।*

कहना न होगा कि भाषा/मातृभाषा के प्रति अनुराग सहज स्वाभाविक है। विद्वानों ने अगर इस पर अपने विचार व्यक्त किए हैं तो आम जनता ने भाषा के नाम पर अपने प्राणों का उत्सर्ग तक किया है। मातृभाषा की रक्षा के कारण बांग्लादेश के लोगों ने जो प्रचंड आंदोलन किया था उसकी वजह से उन्हें गोली खाकर अपना बलिदान देना पड़ा था और उन्हीं बलिदानियों की याद में 21 फरवरी को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया जाता है।

बांग्लादेश का भाषा आंदोलन 1948 में शुरू हुआ जो 1971 में देश की मुक्ति के साथ ही पूर्ण हो पाया। 1948 में, पाकिस्तान के जन्म के सालभर के अंदर ही, पाकिस्तान ने उर्दू को राष्ट्रीय भाषा घोषित कर दिया। पूर्वी पाकिस्तान के बांग्ला भाषा-भाषी बहुल हिस्से में इसके विरोध में आंदोलन शुरू हो गया। 1952 में 21 फरवरी को ढाका में ऐसे ही एक विरोध प्रदर्शन में चार छात्र शहीद हो गए। अंततः बांग्ला भाषा 1971 में बांग्लादेश की मुक्ति के बाद ही पूरे देश की सांविधानिक और मान्यताप्राप्त भाषा बन पाई।

भाषा आंदोलन की इसी पृष्ठभूमि में संयुक्त राष्ट्र के शैक्षणिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन, यूनेस्को (UNESCO) की आम सभा ने 18 नवंबर, 1999 को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस संबंधी प्रस्ताव की स्वीकृति दी और सन् 2000 से प्रत्येक वर्ष 21 फरवरी को यह दिवस मनाया जाने लगा। विदित हो कि पूरे विश्व में 'भाषायी और सांस्कृतिक विविधता तथा बहुभाषिकता को बढ़ावा देने तथा भाषाओं के संरक्षण' के उद्देश्य से यह दिवस मनाया जाता है। यूनेस्को तब से प्रत्येक वर्ष मातृभाषा दिवस पर किसी खास विषय को 'थीम' के रूप में तय कर उस पर अपने मुख्यालय पेरिस (फ्रांस) में कार्यक्रम का आयोजन करता है। 2008 को तो यूनेस्को ने अंतरराष्ट्रीय भाषा वर्ष के रूप में मनाया था। उस वर्ष यूनेस्को का नारा था–भाषाओं का अपना महत्व है! गत वर्ष, यानी 2013 में यूनेस्को ने 'पुस्तक' (द बुक) को थीम बनाया था।

बांग्लादेश में 21 फरवरी को राष्ट्रीय अवकाश होता है। इस दिन लोग ढाका में बलिदानियों की याद में बनाए गए 'शहीद मीनार' (चित्र अगले पृष्ठ पर) पर पुष्प-अर्पण करते हैं। यह दिन पूरे देश में भाषा से प्रेम जताने का दिन होता है। इस दिन साहित्यिक आयोजन और उपहारों का आदान-प्रदान किया जाता है।

भाषा संस्कृति की वाहक होती है और अपने साथ एक संस्कृति भी लाती है। –विश्वनाथ सचदेव

मातृभाषा पर विद्वानों के विचार

मैं हरगिज यह नहीं चाहूँगा कि कोई भी हिंदुस्तानी अपनी मातृभाषा को भूल जाए या उसकी उपेक्षा करे या उसे देखकर शरमाए अथवा यह महसूस करे कि अपनी मातृभाषा के जरिए वह ऊँचे-से-ऊँचा चिंतन नहीं कर सकता। **–महात्मा गाँधी**

हमारी संतान के लिए मस्तिष्क की स्फूर्ति को बढ़ाने का उपाय मातृभाषा के अध्ययन से बढ़कर दूसरा नहीं। ...मातृभाषा हृदय को उत्तेजित करती है, मन को दृढ़ बनाती है, आत्मा को शुद्ध रखती है। **–टॉमस डेविस**

मातृभाषा की हमारी परिभाषा है जिसके बोलने में अनपढ़ से अनपढ़ आदमी और बच्चा तक भी व्याकरण की गलती न कर सके। **–राहुल सांकृत्यायन**

लघुकथा

शब्द की शक्ति

ओम प्रकाश मंजुल

एक राजा का मरणासन्न हाथी था। उसने राज्य में मुनादी कराई– राजा का हाथी जिसके खेत में प्रातःकाल पाया जाए, वह आकर राजा को सूचित करे, पर कोई भी इसकी मौत की खबर न दे, अन्यथा उसे मृत्यु-दंड दिया जाएगा।

हाथी को तो एक दिन मरना ही था, सो वह ईख के खेत में मर गया। खेतवाले के बेटे ने जाकर राजा से कहा, ''राजन्, सप्रणाम निवेदन है कि आपका हाथी मेरे खेत में पड़ा है, पर वह न हिलता-डुलता है, न खाता-पीता है और न साँस लेता है।''

राजा उसकी बात समझ गया। उसने लड़के के वाक् चातुर्य पर रीझकर उसे अपना मंत्री बना लिया। ***पीलीभीत, उ.प्र.***

आजाद ने कहा था :

बाप का नाम?
आजादी!
घर?
जेलखाना!

पुण्यतिथि स्मरण : 27 फरवरी

कविता
भाषा में
आदमी होने की
तमीज है।

पुण्यतिथि स्मरण : 10 फरवरी

भोपाल में नवसाक्षर पुस्तक लोकार्पण

मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में 28 दिसंबर, 2013 को राज्य संसाधन केंद्र एवं राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के संयुक्त तत्वावधान में पुस्तक लोकार्पण और संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम में न्यास से हाल ही में प्रकाशित 19 पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। पुस्तकें थीं–*फिर मुस्काई नीतू,* सुषमा दुबे; *रोशनी,* अनुराग वाजपेयी; *झिलमिल,* निशात फातिमा; *गाँव का बेटा,* राकेश चक्र; *दीनू से दीनानाथ,* राजेश साहू; *राजा के दो सींग,* ऋषि मोहन श्रीवास्तव; *बकरी का बच्चा,* संदीप श्रीवास्तव; *हम सब एक हैं,* फारूख आफरीदी; *रेवा की वापसी,* सीमा व्यास; *जानकी,* संजय सिंह राठौर; *कांकेर के गांधी : इन्दर केवट,* परदेशी राम वर्मा; *सुबह का इंतजार,* पंकज भार्गव; *मत रो सुखिया,* राकेश पाण्डेय; *सुमन की जीत,* राजुरकर राज; *भूत आदमी,* लियाकत खोकर साहिल; *बालक की सीख,* सुदर्शन वशिष्ठ; *गुटखाराम,* गिरीश पंकज; *मोबाइल देवता,* प्रेम जनमेजय; *नामवाले चाचा,* आशीष दशोत्तर। कार्यक्रम का समन्वय न्यास में हिंदी संपादक श्री ललित किशोर मंडोरा ने किया।

पुण्यतिथि स्मरण : 15 फरवरी (1948)

यहाँ प्रस्तुत है सुभद्रा की एक प्रसिद्ध कविता की चंद पंक्तियाँ :

मैं भी उसके साथ खेलती
खाती हूँ तुतलाती हूँ
मिलकर उसके साथ स्वयं
मैं भी बच्ची बन जाती हूँ।

सुभद्रा कुमारी चौहान

चलो तुम, कि
रुके हुए रास्ते
चल पड़े
हुंकार भरो तुम, कि
दिशा-दिशा हुंकार उट्ठे
जिओ तुम, कि
जिंदगी जी उट्ठे।

मीना गुप्ता, आगरा, उ.प्र.

राष्ट्रभाषा हिंदी देश की जागरूकता तथा उद्‌बोधन की प्रतीक है। **–सूर्यकांत त्रिपाठी निराला** (जयंती : 21 फरवरी, 1897)

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की नवसाक्षर साहित्यमाला के अंतर्गत कुछ वरिष्ठ लेखकों की रचनाएँ

पानी

रामदरश मिश्र पृ. 16 ₹ 7.00

ग्रामीण समाज में व्याप्त छुआछूत की मानसिकता को बदलने वाले प्रतिष्ठित कथाकार की एक प्रभावी रचना।

ISBN 81-237-1891-8

करामातीलाल की तलवार

प्रकाश मनु पृ. 14 ₹ 11.00

काछीपुर के करामातीलाल की यह कहानी जितनी रोचक है उतनी हँसाती भी है और गुदगुदाती भी है।

ISBN 978-81-237-5840-4

वसंतसेना

महाकवि शूद्रक; पुनर्लेखन : प्रयाग शुक्ल पृ. 32 ₹ 7.00

संस्कृत साहित्य की विख्यात कहानी को नवसाक्षरों के लिए सरल और रोचक शब्दों में प्रयाग शुक्ल ने लिखा है। इसमें कथा है कि किस तरह उज्जयिनी की नर्तकी बाद में नगरवधू का दर्जा पा लेती है। ISBN 81-237-2892-1

जंगल

चित्रा मुद्गल पृ. 20 ₹ 13.00

वरिष्ठ कथाकार की बहुत ही आत्मीय शैली में लिखी रचना, जो बतलाती है कि छोटों के मन को समझना कितना कठिन है। ISBN 978-81-237-5867-1

नमक का दारोगा

प्रेमचंद; रूपां. : अशोक वशिष्ठ पृ. 20 ₹ 13.00

प्रेमचंद द्वारा लिखी एक प्रसिद्ध रचना। यह रचना मानवीय मूल्यों की स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत करती है।

ISBN 978-81-237-4511-4

मुरब्बी

विष्णु प्रभाकर

रूपां. : रमाशंकर श्रीवास्तव पृ. 20 ₹ 12.00

वरिष्ठ कथाकार की यह एक बड़ी रोचक कथा है। भाषा का मिजाज और खूबसूरती इसकी प्रमुख विशेषता है।

ISBN 978-81-237-4681-0

मौसी पपीतेवाली

देवेन्द्र सत्यार्थी पृ. 18 ₹ 15.00

अविश्वास के इस दौर में भी एक पपीतेवाली की ईमानदारी को दर्शाती एक भावप्रवण कहानी।

ISBN 978-81-237-6034-6

करामात

कर्त्तार सिंह दुग्गल पृ. 16 ₹ 7.00

वरिष्ठ कथाकार की एक श्रेष्ठ कहानी, नवसाक्षरों के लिए।

ISBN 81-237-4201-0

करमू

बलदेव वंशी पृ. 16 ₹ 9.00

बाल श्रम पर केंद्रित एक मार्मिक कहानी।

ISBN 978-81-237-4767-5

अपना रास्ता लो बाबा

काशीनाथ सिंह; रूपां. : महेश दर्पण पृ. 16 ₹ 11.00

शहर में सब बीमारियों का इलाज होता है। यही सुनकर बेचू बाबा शहर आए। देवनाथ ने बाबा के दर्द को समझा और डॉक्टर को दिखाया। बाबा आश्वस्त हो आशीर्वाद दे अपने गाँव लौट गए। ISBN 978-81-237-2344-0

एक थी सुल्ताना

नासिरा शर्मा पृ. 24 ₹ 13.00

मुस्लिम लड़की भी तलाक ले सकती है। समाज में दोनों को बराबर का अधिकार है। कल्लू मियाँ की लड़की सुल्ताना ने भी अधिकार को समझा और दूसरी शादी के लिए हामी भर दी।

ISBN 978-81-237-4560-2

नए सपने

महेश दर्पण पृ. 16 ₹ 9.00

छुआछूत के दंश को आधार बनाकर लिखी इस कहानी में कला नाम की किशोरी दलित लड़की की आँखों में खुद को इनसान समझे जाने की उम्मीद जगी है। एक मार्मिक कथा।

ISBN 978-81-237-5365-2

गुरुजी

शरतचंद्र चट्टोपाध्याय; रूपां. : हरिमोहन पृ. 16 ₹ 8.00

बांग्ला के सुपरिचित कथाकार की एक महत्वपूर्ण रचना का हिंदी सरलीकरण लेखक हरिमोहन द्वारा प्रस्तुत।

ISBN 978-81-237-4391-2

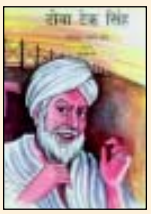

टोबा टेक सिंह

सआदत हसन मंटो; रूपां. : शेरजंग गर्ग पृ. 20 ₹ 8.00

उर्दू के प्रसिद्ध रचनाकार की विश्व प्रसिद्ध कहानी का रूपांतरण सरल भाषा में प्रस्तुत। ISBN 81-237-4351-3

बड़ी हो रही है लड़की

रघुवीर सहाय पृ. 16 ₹ 7.00

लड़की किन परिस्थितियों में कैसे और किस तरह अपना विकास करती है। ऐसे ही सतरंगी रंगों को इस किताब में समेटा गया है। ISBN 978-81-237-3114-8

बतायो फकीर की कहानियाँ

मोतीलाल जोतवाणी पृ. 12 ₹ 7.00

छोटी कथाएँ जीवन को कैसे गति देती हैं? कौतूहल जगाती है यह पुस्तक। ISBN 81-237-2842-5

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की नवसाक्षर साहित्यमाला के अंतर्गत हाल के कुछ नए प्रकाशन

हाय पकवान!

मो. साजिद खान पृ. 20 ₹ 11.00

बड़े परिवार होने की दुश्वारियाँ इस रूप में भी सामने आए कि घर के मालिक को ही अपने बच्चों से छिपकर पकवान बनाने की कवायद करनी पड़े तो इस स्थिति को समझा जा सकता है। एक हास्य एकांकी। ISBN 978-81-237-5894-7

बहादुरी की तीन पीढ़ियाँ

श्याम विमल पृ. 16 ₹ 9.00

1857 की भारतीय क्रांति के एक महान वीर कुँअर सिंह, उनके पिता साहबजादा सिंह एवं दादा उमराव सिंह की बहादुरी के किस्सों का इस पुस्तक में वर्णन किया गया है।

ISBN 978-81-237-5893-0

बिरसा की कहानी

महावीर प्रसाद सिंह 'माधव' पृ. 12 ₹ 14.00

झारखंड में बिरसा नामक एक वीर ने अँग्रेजों के अत्याचार के विरुद्ध बड़ी लड़ाई लड़ी। अंत में अँग्रेजों ने उन्हें पकड़ लिया, लेकिन बिरसा की बहादुरी का उन्होंने भी लोहा माना।

ISBN 978-81-237-6207-4

सब रो पड़े

हूंदराज बलवाणी पृ. 16 ₹11.00

अनपढ़ता अभिशाप है। एक पत्र न पढ़ पाने पर कैसे गलतफहमी हो गई और पत्र नहीं पढ़ पाने वाले अशिक्षित बुढ़िया, दूधवाला, फुग्गेवाला सब रो पड़े। इसे प्रेरणाप्रद ढंग से समझाया गया है। ISBN 978-81-237-6628-7

पंछीपुर की परमेसरी

प्रदीप पंत पृ. 20 ₹13.00

पंछीपुर गाँव की परमेसरी सरपंच चुने जाने पर कैसे अपने गाँव में सफाई, पर्यावरण और नशामुक्ति के लिए लोगों को प्रेरित करती है—एक संदेशपरक कहानी।

ISBN 978-81-237-6632-4

पुस्तक की दुकान

डॉ. पुष्पा सिंह 'विसेन' पृ. 16 ₹ 11.00

जमींदारों द्वारा निचले तबके के लोगों को दबाकर रखने की प्रवृत्ति के बावजूद कैसे एक बालक अपनी इच्छा शक्ति से इस प्रपंच से बाहर निकलकर पढ़-लिखकर योग्य बनता है इसका प्रेरणाप्रद वर्णन है। ISBN 978-81-237-6545-7

व्हील चेयर

विनोद कुमार मिश्र पृ. 20 ₹ 11.00

कथा शैली में व्हील चेयर के अनेक पहलुओं की महत्वपूर्ण जानकारी दी गई है यहाँ। ISBN 978-81-237-6819-9

रोशनी

अनुराग वाजपेयी पृ. 16 ₹11.00

राजस्थान के बाड़मेर की पृष्ठभूमि में रची इस कहानी में अंधविश्वास के कारण एक छोटी बच्ची की बलि चढ़ा देने का करुण और मार्मिक विवरण है।

ISBN 978-81-237-6034-6

पुरवा व पछुआ की मधु और राधा

रश्मि बड़थ्वाल पृ. 12 ₹ 14.00

पुरवा गाँव की मधु और पछुआ गाँव की राधा ने अपने-अपने गाँव में स्वास्थ्य और साफ-सफाई के संबंध में जागरूकता पैदा कर गाँववालों में चेतना जगाई।

ISBN 978-81-237-6263-0

साँवरी

अनीता चौधरी पृ. 16 ₹ 13.00

गौरी और साँवरी जमींदार की दो बेटियाँ हैं। साँवरी अच्छी शक्ल-सूरत की न होकर भी दिल से अच्छी थी। उसने गौरी सहित पूरे परिवार का हृदय परिवर्तन कर दिया।

ISBN 978-81-237-6175-6

पर्यावरण की पुजारिन

रामशंकर चंचल पृ. 24 ₹ 13.00

पर्यावरण चेतना का संदेश देती एक उपयोगी पुस्तक। वनांचल झाबुआ नगर की पृष्ठभूमि में कथा शैली में लिखी इस कहानी में पर्यावरण के प्रति सभी को जागरूक रहने की प्रेरणा मिलती है। ISBN 978-81-237-6544-0

पुस्तक मेरा मित्र

कामना झा पृ. 36 ₹ 15.00

पुस्तक से जी चुराने वाले कभी तरक्की नहीं कर पाते। जो पुस्तक को अपना मित्र बनाते हैं सफलता हर कदम उनके पाँव चूमती है। इसी भावभूमि पर है यह पुस्तक।

ISBN 978-81-237-6668-3

गाँव की बेटी

संदीप सृजन पृ. 16 ₹11.00

संपत नगर गाँव के जमींदार अपनी बहुओं से केवल पुत्रों की आशा करते थे, पुत्रियों की नहीं। तो भी, एक बहू की जब बेटी हुई तो बड़ी होकर वह डॉक्टर बन गई। जमींदार को अपनी भूल पर पछतावा हुआ। ISBN 978-81-237-6630-0

फिर मुस्काई नीतू

सुषमा दुबे पृ. 16 ₹ 12.00

किशोरवय में पहुँच रही बच्ची नीतू को स्कूल के एक कर्मचारी की कुत्सित हरकतों के कारण स्कूल छोड़ना पड़ा। बाद में गलत हरकत करने वाले कर्मचारी को सजा मिली और नीतू को स्कूल जाने का हौसला। ISBN 978-81-237-6820-5

दीनू से दीनानाथ

राजेश कुमार साहू पृ. 16 ₹ 11.00

दीनू मजदूरी करते हुए, जानवरों को चराते हुए भी पढ़ना-लिखना सीख गया। उसने वृक्षारोपण की प्रेरणा दी, ताकि गाँव में ही शव-दहन हेतु लकड़ी की उपलब्धता हो सके।

ISBN 978-81-237-6667-6

झिलमिल

निशात फातिमा पृ. 20 ₹13.00

झिलमिल कैशोर्य में आ गई है, पर माँ उस पर लगातार और तरह-तरह की बंदिशें लगाती है। इससे घबराकर लड़की भाग जाती है—अपनी चाची के घर। अधिक बंदिश ठीक नहीं, यही संदेश है। ISBN 978-81-237-6629-4

जन-जन में शिक्षा फैलाओ यारो
अनपढ़ता को दूर भगाओ यारो
अँगूठाटेक न कोई रहे, देखो
हस्ताक्षर करना भी सिखलाओ यारो।

सुरेंद्र अंशुल, अंबाला शहर, हरियाणा

दीप जलाकर ज्ञान के
दूर करो अंधकार
समता स्नेह करुणा से
भरो दिल के भंडार।

विशाल शुक्ल 'ॐ', छिंदवाड़ा, म.प्र.

अनपढ़ को यदि आप पढ़ाओ
इस सेवा का मेवा पाओ
यह तो ईश्वर की पूजा है
इससे ऊँचा धर्म नहीं कोई दूजा है।

रूपनारायण काबड़ा, जयपुर, राजस्थान

मत गिरना अनपढ़ता के गर्त में
पढ़-लिखकर तुम
बनना साक्षर।

रामप्रसाद शर्मा 'प्रसाद', सिहाल, कांगड़ा हि.प्र.

पुस्तकालय
एक जीवित स्वर्ग
धरती पर।

आनंद बिल्थरे, बालाघाट, म.प्र.

कोई भी देश सच्चे अर्थों में तब तक स्वतंत्र नहीं हो सकता जब तक वह अपनी भाषा में नहीं बोलता है। –महात्मा गाँधी

पाठकीय प्रतिक्रिया

☐ **सा. सं. : जनवरी, 2014 :** नवसाक्षरों के लिए हिंदी वर्णमाला सीखने की कविता बहुत ही उपयोगी है। लुई ब्रेल पर दी गई जानकारी ज्ञानवर्धक थी। महापुरुषों के जन्म एवं निधन की तिथियों पर उन्हें याद करने, उनके विचार जानने के लिए आपकी प्रस्तुति काबिलेतारीफ है। साथ ही, उच्च स्तर की साक्षरता-चेतना जगाने वाली कविताएँ भी प्रेरक और संदेशपरक होती हैं। पत्रिका लघु होते हुए भी 'गागर में सागर' की उक्ति को चरितार्थ करती है। पत्रिका का हरेक अंक सराहनीय एवं संग्रहणीय है।

साक्षरता संवाद भले ही छोटा है
पाठकों का इस पर बहुत ही भरोसा है
निरक्षरों को बनाता है यह साक्षर
अनपढ़ भी करने लगे अब हस्ताक्षर।

विजय सिंह बलवान, जटपुरा, बुलंदशहर, उ.प्र.

☐ जनवरी माह से जुड़े महापुरुषों के बारे में उनके चित्र के साथ सारगर्भित सामग्री प्रस्तुत की गई है। सामग्री सामयिक है। लुई ब्रेल के जीवन के बारे में रोचकता के साथ नवीन तथ्यों का भी उद्घाटन किया गया है। बीच-बीच में प्रकृति के उपादानों एवं सुरम्य दृश्यों के चित्रण से पत्रिका नयनाभिराम भी बनी है। नई दिल्ली में होने वाले नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के बारे में भी उपयोगी एवं समसामयिक संक्षिप्त जानकारी है। संपूर्ण काव्य पक्ष सामयिक, सकारात्मक एवं नवसाक्षरों एवं अपढ़ों को प्रेरणा प्रदान करने वाला है। श्री गिरिवर गिरि गोस्वामी निर्मोही की 'हिंदी वर्णमाला सीखो' शीर्षक कविता बच्चों एवं नवसाक्षरों के लिए उपयोगी एवं प्रेरक रचना है, पर संपूर्ण पद्य भाग में श्री राकेश 'चक्र' की कविता, 'कुछ नया अंदाज भर लो' अपनी कई श्रेष्ठ विशेषताओं के कारण अंक की सर्वश्रेष्ठ कविता है। 'ऐसे थे बापू' को देकर आपने अंक को पूर्ण कर दिया। वर्तनी व व्याकरण आदि के मामले में भी अच्छा अंक है। मेरे विचार से समीक्ष्य अंक हर प्रकार से एक सफल अंक है। इस श्रेष्ठ संपादन, प्रस्तुतीकरण एवं प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई!

ओम प्रकाश मंजुल, पूरनपुर, पीलीभीत, उ.प्र.

☐ पत्रिका के माध्यम से साक्षरता का जो अभियान आपने प्रारंभ किया है, वह निःसंदेह सराहनीय व श्लाघनीय है। इसकी निरंतर सक्रियता पाठक वर्ग को लाभान्वित कर रही है।

प्रकाश सूना, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

☐ साक्षरता संवाद को / पाठक बन पढ़ता हूँ
साक्षरता संवाद में / लेखक बन लिखता हूँ
साक्षरता संवाद जब / मेरे घर में आती
'प्रसाद' हृदय-कली / खिलकर फूल बन जाती
नेशनल बुक ट्रस्ट का / यह सुंदर उपहार
मिलता रहे मुझको / वर्ष में बारह बार
पुस्तकीय गतिविधियों / की जानकारी मिलती
पुस्तक प्रदर्शनी देख / हैं बाँछें खिल जातीं।

रामप्रसाद शर्मा 'प्रसाद', सिहाल, कांगड़ा, हि.प्र.-176053

जालंधर पुस्तक मेला, पंजाब

15 से 23 मार्च, 2014

स्थान : देशभगत यादगार हॉल, जालंधर समय : सुबह 11 से रात्रि 8 बजे तक

विशेष आकर्षण : ● प्रतिदिन साहित्यिक कार्यक्रम

● 60 से अधिक प्रकाशक ● पंजाबी, हिंदी, उर्दू एवं अँग्रेजी की पुस्तकें

आयोजक : **राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत**

रचनाकार कृपया ध्यान दें : **पत्रिका के अनुकूल शिक्षा, साक्षरता, पुस्तक एवं पठन-पाठन से संदर्भित रचनाएँ ही भेजें–प्रेरक, उद्बोधक। साफ एवं पठनीय शब्दों में लिखें, रचनाएँ संक्षिप्त भेजें। बाल रचनाएँ कृपया न्यास की 'पाठक मंच बुलेटिन' पत्रिका में भेजें।** *–संपा.*

शिक्षा अज्ञान दूर करे

डॉ. वासुदेवन 'शेष', अन्ना सलाई, चेन्नै

शिक्षा से ज्ञान का भंडार भरे
अशिक्षा से अंधकार बढ़े।
शिक्षा से प्रगति-पथ पर बढ़े
ऊँचे से ऊँचे पर्वतों पर चढ़े।
शिक्षा से राष्ट्र की प्रगति बढ़े
अशिक्षा से राष्ट्र पतन को मुड़े।
शिक्षा से संस्कृति, सभ्यता बढ़े
अशिक्षा से अन्याय, अत्याचार बढ़े।
शिक्षा से प्रेम, प्रीत, मीत बढ़े
अशिक्षा से शत्रु, वैमनस्य बढ़े।
शिक्षा अपनाकर सब आगे बढ़े
अशिक्षा को दफनाकर पीछे मुड़े।

साक्षरता की महिमा न्यारी

गोपीनाथ कालभोर, खंडवा, म.प्र.

घर में खुशियाँ आती सारी
साक्षरता की महिमा न्यारी।
जो साक्षर है वह न निरक्षर
पढ़ता-लिखता वह है अकसर
जिसको पढ़ना-लिखना आता
उसकी कद्र होती घर भारी।
अनपढ़ को बुद्धू सब कहते
काम भी सब करने हैं पड़ते
साक्षर जो हो जाता पढ़कर
लोग कहते इसको समझदारी।
शिक्षित हो आगे जो बढ़ता
सुखमय जीवन उसका चढ़ता
रोजगार, व्यापार से उसकी
छवि बन जाती सबसे न्यारी।

मातृभाषा दिवस पर

हिंदी हिल-मिल रहो सिखावत

मोहन लोधिया, जबलपुर, म.प्र.

चाहे एक जून की खइयो
मोड़ा-मोड़ी खों हिंदी पढ़इयो।
हिंदी पढ़ावे में सब दुख टरहैं
अँग्रेजी के प्राण निकर हैं
चाहे रोटी नोन में खइयो
मोड़ा-मोड़ी खों हिंदी पढ़इयो।
अँग्रेजी हम तुम खों बाँटत
हिंदी हिल-मिल रहो सिखावत
हिंदी खून में लइयो
मोड़ा-मोड़ी खों हिंदी पढ़इयो।
मैकाले ने सबखों भंग पिलाई
अब लों लड़ रये भाई-भाई
इनकी बातन में न अइयो
मोड़ा-मोड़ी खों हिंदी पढ़इयो।
मम्मी-पापा दूर भगाके
अम्मा-बाबू खों घर में लाके
भुंसारे से पाँव छुअइयो
मोड़ा-मोड़ी खों हिंदी पढ़इयो।
बाजारों में नाम की पट्टी
हिंदी में लिखवाओ झट्टी
अँग्रेजी पे डामर पुतइयो
मोड़ा-मोड़ी खों हिंदी पढ़इयो।
पाँच किलो को बस्ता ढोके
अँग्रेजी पढ़वे खों भेजी
मोटो चश्मा नाक पे धरके
मोड़ी जारइ पढ़वे केजी
मोरी नातनखों-इ-सेबचइयो
मोड़ा-मोड़ी खों हिंदी पढ़इयो।

R. N. I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2012-14
Mailing date 25/26 same month
Date of publication 15/02/2014

साक्षरता अभियान संचेतना का वाहक है
शिक्षा की पावन धरा है
आओ, संकल्प लें
साक्षर बनें
ज्ञान के विस्तार का माध्यम बनें!

अंजना अनिल, अलवर, राजस्थान

जो भी पढ़ेगा-लिखेगा
वही दुनिया को समझेगा
जो दुनिया को समझेगा
वही जीवन में आगे जाएगा।

नरेंद्र नाथ लाहा, ग्वालियर, म.प्र.

रा.पु. न्यास से प्रकाशित नवसाक्षर साहित्यमाला के अंतर्गत नई पुस्तक

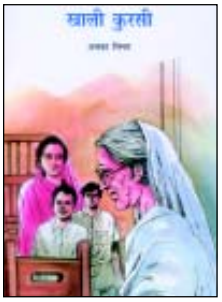

खाली कुरसी

अलका सिन्हा

चित्र : अतुल वर्धन पृ. 16 ₹ 15

रतनमा अपने बेटे-बहू के साथ रहती थी। बेटा माधवन व बहू राधिका काम पर जाते तो देर रात ही लौटते। ईश्वर की इच्छा, जल्द ही बहू को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। समय पंख लगाकर उड़ता रहा। शिशु समय के साथ बड़ा हुआ। स्कूल जाने लगा। एक दिन की बात, बालक विनायक ने बालहठ पकड़ा–दादी, आप भी स्कूल पढ़ने चलो! रतनमा हैरान। इस उम्र में पढ़ाई! आखिर रतनमा पोते के साथ स्कूल गई। देखा, बुजुर्ग अभिभावक एक अलग कक्ष में बने प्रौढ़ शिक्षा केंद्र में पढ़ाई कर रहे हैं। रतनमा को भी हिम्मत आई। वह उस कक्ष में पड़ी एक खाली कुरसी पर बैठ गई। अब से वह भी अक्षर ज्ञान सीखेगी। वह हर्षित थी। सच, पढ़ने की कोई उम्र नहीं होती।

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन अधिकारी : **नरेन्द्र कुमार**

साक्षर भारत

nbt.india
एक: सूते सकलम्

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक : बलदेव सिंह 'बद्दन'।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070